# ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान
# बिसवाँ सीतापुर

# ■ सद्गुरु की चेतावनी -

मन का आँगन नहीं बहारा !

मन में सुमति को क्यों नहिं धारा !

मन की गति को नहीं संवारा !

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ... ?

तूने परमेश्वर नहीं जाना !

ईश्वर माया को ही माना !

तूने मूर्ति को ईश्वर जाना !

कैसे आएंगे भगवान ... ... ...?

तूने पारब्रह्म नहीं जाना !

तूने ब्रह्म को ही सब माना !

तूने प्रकृति को नहि पहिचाना !

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ...?

तूने सार शब्द नहीं जाना !

तूने अनहद को ही माना !

तूने नूर को सब कुछ जाना !

कैसे आएंगे भगवान ... ... ...?

तूने अनाम को क्यों नहीं जाना !

तूने नाम रूप ही माना !

तूने शरणागति नहीं जाना !

कैसे आएंगे भगवान... ... ... ... ?

तूने अद्वैत का मत नहीं जाना !

मत द्वैत का है पहचाना !

मत काल का है यह ज्ञाना !

कैसे आएंगे भगवान... ... ... ?

आतम बोध को क्यों नहीं जाना !

तूने ब्रह्म ज्ञान ही जाना !

तूने तत्त्वों को पहिचाना !

कैसे आएंगे भगवान... ... ... ?

मत आतम का नहिं जाना !

तूने मन का मत ही माना !

इंद्रियों को सब कुछ जाना !

कैसे आएंगे भगवान... ... ... ?

पद परम को क्यों नहीं जाना ।

तूने स्वर्ग को ही सब माना ।

तन मुख्य है क्यों नहीं माना ।

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ... ?

तूने सहज समाधि न जाना ।

तूने ध्यान भजन ही माना ।

सुमिरन हरि का क्यों नहीं जाना ।

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ... ?

परमात्मा धार रूप नहिं जाना !

तूने अनहद को ही माना !

आत्मा प्रकाश रूप क्यों माना !

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ?

परमात्मा विदेही है नहीं जाना !

उसको देही में ही माना !

उसको मन के परे न जाना !

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ?

ईश्वर एक है यह नहीं जाना ।

देवता तैंतीस कोटि को माना ।

नवग्रह की पूजा है माना ।

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ?

तूने वेद पुराण ही माना ।

तूने संत को क्यों नहीं जाना ।

तूने सद्गुरु नहीं पहचाना ।

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ?

तूने चक्रव्यूह नहिं तोड़ा!

मन को आतम से नहिं जोड़ा!

मन को सम करना नहिं जाना!

कैसे आयेंगे भगवान ... ... ... ?

तूने गति अकर्म नहिं जाना !

तूने कर्म को ही सब माना !

तूने कर्ता खुद को माना !

कैसे आयेंगे भगवान ... ... ...?

तूने परमधर्म नहिं जाना !

तूने धर्म को ही सब माना !

तूने जीव को आत्मा माना !

कैसे आयेंगे भगवान ... ... ?

तूने क्षीर सिंधु नहिं जाना !

जीव और आत्मा में भेद न माना !

ईश्वर अपने अंदर क्यों माना !

कैसे आयेंगे भगवान ... ... ... ?

आत्मा मुख्य है, यह नहिं जाना !

नारायणी सेना को मुख्य क्यों माना !

सत्य और माया की पहिचान न जाना !

कैसे आयेंगे भगवान... ... ... ...?

कैसे सहज हो मन नहिं जाना !

भेद अनन्य का भी नहिं जाना !

बैराग्य है क्या, यह भी नहिं जाना !

कैसे आयेंगे भगवान... ... ... ?

परमात्मा अचल अतत्व न जाना !

ईश्वर मन को ही है माना !

तूने तत्व को ईश्वर माना !

कैसे आएंगे भगवान ... ... ... ?

खोजो चौथे पद का ज्ञाना !

तीन लोक मैं पद अज्ञाना !

सनमुख जीव के आत्मा आना !

तभी तो आयेंगे भगवान ... ... !!

सुरेशादयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903